'छँगुरी' : लोक की पीड़ा को वाणी देने वाली

गौरव गौतम[1]

शोधसार - 'छँगुरी' सुमन सिंह का कहानी संग्रह है जिसमें 11 कहानियाँ है। सबसे पहले कहानियों के शीर्षक- 'अतीत', 'मोल', 'मिलन' आदि पढ़ के 'अज्ञेय' की डायरियों के शीर्षक - 'भवंती', 'अंतरा', 'शाश्वती' आदि याद आता है। हालांकि दोनों अलग- अलग विधाओं के शीर्षक है लेकिन मनमोहक है। प्रतीत होता हैं कि यह शीर्षक बहुत सोच- विचार के रखे गये है और यदि यह अनायास ही रखे गए है फिर भी सुंदर बन पड़े है। सुमन जी ने कहानियों को 'लोक' से विमर्श व विचारधारा के लेंस चढ़ाये बगैर उठाया है। ऐसे ही कुछ कथा साहित्य का लोकजीवन परक विश्लेषण प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है।

कुंजी शब्द - छँगुरी, सुमन सिंह, कहानी संग्रह, कहानियाँ, अज्ञेय, सामाजीकरण, विचारधारा, मनोविश्लेषण, लेखक, कथा साहित्य, आचार्य शुक्ल।

'छँगुरी' सुमन सिंह का कहानी संग्रह है जिसमें 11 कहानियाँ है। सबसे पहले कहानियों के शीर्षक- 'अतीत', 'मोल', 'मिलन' आदि पढ़ के 'अज्ञेय' की डायरियों के शीर्षक - 'भवंती', 'अंतरा', 'शाश्वती' आदि याद आता है। हालांकि दोनों अलग- अलग विधाओं के शीर्षक है लेकिन मनमोहक है। प्रतीत होता हैं कि यह शीर्षक बहुत सोच- विचार के रखे गये है और यदि यह अनायास ही रखे गए है फिर भी सुंदर बन पड़े है। सुमन जी ने कहानियों को 'लोक' से विमर्श व विचारधारा के लेंस चढ़ाये बगैर उठाया है। सामाजीकरण व अध्ययन के दौरान अमूमन यह होता ही है कि हमारा चिंतन किसी न किसी विचारधारा या विमर्श के दायरे में ही होता है हम उससे अवगत हो या न हो। किंतु यदि विचारधारा को केंद्र में रखकर कहानी या किसी भी विधा में लिखा जाता है तो उससे ज्यादतर विचारधारा केंद्र में और कथ्य हाशिए में चला जाता है जिसे मनोविश्लेषण से प्रभावित लेखक 'इलाचन्द्र जोशी' के कथा साहित्य में देखा जा सकता है। सुमन सिंह की कहानियों में 'उर्मिला शिरीष' ने जिस 'कहानीपन' की बात की है(1) वह इसी वजह से है कि इन 11 कहानियों में भले कोई विचारसरणि मिल जाए लेकिन वह कहानी में सायास लायी हुई प्रतीत नहीं होती है।

[1] शोधार्थी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

आचार्य शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्य काल कहा है। इस काल में कहानी विधा लेखन के शुरुआती दौर से ही महिलाओं की सशक्त भूमिका रही है। राजेंद्र बाला घोष (बंग महिला) की कहानियाँ उस समय के किसी भी लेखक की तुलना में उन्नीस नहीं है। मौजूदा समय में संचार साधनों के बढ़ते प्रसार व ब्लॉग के प्रचलन से महिला कहानीकारों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि हुई है। ऊपर यह बताया गया है कि सुमन जी ने कहानी लोक से उठायी है। 'समाज' की जगह 'लोक' शब्द इसलिए प्रयोग किया गया कि 'समाज' 'सामाजिक संबंधों के जाल' तक सीमित होता है जबकि लोक की अवधारणा ज्यादा व्यापक है। लोक के भीतर भी अनेक धाराएँ होती है जो सुमन जी के इस संग्रह में मौजूद है क्योंकि इसमें गाँव- शहर दोनों जगहों की एवं उच्च- निम्न दोनों वर्गों की कहानियाँ है। कहानियों में बाहरी दुनिया का यथार्थ है तो व्यक्ति के भीतर की मानसिक उधेड़बुन भी है। संग्रह की ज्यादातर कहानियों की मुख्य पात्र स्त्री ही है कुछ कहानियाँ जैसे 'पश्चाताप' में पिता जो अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु से दुःखी है वह ज्यादातर बात अपनी पत्नी 'तुलसी' की ही करता है इसी तरह 'निलंबन' कहानी की शुरुआत तो बलदेव मिश्रा से होती है लेकिन कहानी में वो अपनी पत्नी, बेटी, प्रोफेसर मोनिका कालरा और प्रिंसिपल (जो कि एक स्त्री ही है) से घिरे होते है। कहानी की शुरुआत में उनकी पत्नी उनसे इसी कारण खिन्न है कि उनके घर उनके निर्देशन में शोध करने वाली छात्रा हेमलता सोनाने के चाल-ढंग उन्हें पसंद नहीं आता और कहानी खत्म निलंबन पत्र से होती है जो प्रिंसिपल उन्हें यह कहते हुए देती है कि हेमलता सोनाने ने बलदेव मिश्रा के ऊपर आरोप लगाए है। वह यह सलाह भी देती है कि उनकी गलती हो या न हो वो इस मामले को 'मुलायमियत' से निपटा ले।

सुमन जी की कहानियाँ भूमंडलीकरण के बाद की है। भूमंडलीकरण ने संचार साधनों को बढ़ाकर व्यक्ति को पास ला दिया है लेकिन रिश्तों के बीच भावनात्मक संबंधों में भी दूरियाँ आई है। हमें यह आशा होती है कि हम जिससे बात करना चाहते है उससे हमारी बात हो जायेगी किंतु यदि सामने वाले का मन नहीं है तो वह किसी से यह भी कहलवा सकता है कि वह व्यक्ति अभी मौजूद नहीं है या कोई अन्य व्यक्ति ही कह सकता है कि अमुक व्यक्ति मौजूद नहीं है। 'मोल' कहानी में बूढ़ी अम्मा चंद्रा जिसकी उम्र 70 वर्ष है वह अपने बेटे चंद्रहास को फोन करने के लिए अपने घर से दूर पीसीओ तक आती है लेकिन उसकी बहू मना कर देती है कि चंद्रहास पास में नहीं है इस उपेक्षा से चंद्रा टूट जाती है और कहती है " आजकल ये जो मोबाइल और फोन का जो ज़माना आया है सारे रिश्तों, भावनाओं पर भी खाक डाल रहे हैं। जब बात न करनी हो मोबाइल ऑफ कर दो। इतनी जरूरी बात की ख़बर दी है पर पलट कर एक बार भी पूछने की जरूरत नहीं समझी कि हम जिंदा भी है या मर गए?"(2)चंद्रा रिश्तें में अपनत्व की कमी से अवसादमय हो जाती है। उसकी "आत्मा की भूख" उसे और उसके पति को संत्रास की स्थिति में ले आती है जिसका परिणाम होता है

आत्महत्या। यह कहानी प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी' और भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' से आगे की कहानी है। 'बूढ़ी काकी' में मूल समस्या भौतिकता की हैं कि काकी की जरूरत ही उसके बेटे बहू पूरी नहीं करते जबकि संपत्ति काकी की है। 'चीफ़ की दावत' में माँ को व्यक्ति न मानकर वस्तु मान लिया गया हैं जो 'चीफ़' के सामने आने लायक नहीं हैं जबकि 'मोल' कहानी में संवेदना की समाप्ति मूल समस्या है जो आजकल वृद्धजन झेल रहे है। उनके रहने के लिए घर बहुत है पर साथ में केवल सन्नाटा रहता है जो उनके भीतरी स्पंदन को भी शांत कर देता है और इसके जिम्मेदार भी कहीं न कहीं माँ- बाप ही होते है। गलाकाट प्रतियोगिता के दौर में आरम्भ से ही संतान के मन में आगे बढ़ने की चाह इतना भर देते है कि संस्कार में वह कब पिछड़ गया इसका उन्हें पता ही नहीं चल पाता और वो अकेले रहने को अभिशप्त हो जाते है लेकिन अपने किए का मोल नहीं चुका पाते।

तकनीकी युग में परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहा है कि पीढ़ियों के बीच के अंतराल की चौडाई बढ़ती ही जा रही है। मन्नू भंडारी ने अपनी कहानी 'त्रिशंकु' में बताया है कि कैसे माँ बाप की स्थिति त्रिशंकु जैसे हो जाती है क्योंकि उन्होंने अपने समय में घर समाज से अलग जो निर्णय लिया उसका उन्हें गर्व होता है लेकिन बदलते समय के साथ लोक के मानक भी बदल जाते है जिससे पहले जो बातें विद्रोह की श्रेणी में आती है वह बाद में सामान्य हो जाती है और बदलते मूल्यों के साथ माँ- बाप कदमताल नहीं कर पाते जिससे बच्चों से उनकी दूरियाँ बढ़ जाती हैं। 'पश्चताप' कहानी में तुलसी और उसके पति परिवार के खिलाफ़ जाकर अंतर्जातीय विवाह करते है लेकिन जब उनका बेटा साहिल अपने से 10 साल बड़ी शादीसुदा मीना के साथ रिश्ते में आता है तो माँ बेटे से खिन्न हो जाती है और माँ- बाप तथा बेटे के मध्य मानसिक दूरियाँ बढ़ जाती है।

वर्तमान व्यवस्था में बाज़ार ने अपने पाँव इतना फैला लिए है कि व्यक्ति उपभोक्ता में परिवर्तित हो गया है। अतिरिक्त वस्तु वह इतनी इक्ट्ठा कर लेता हैं कि जरूरत की वस्तु खरीदना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। विलासिता और आवश्यकता में फर्क करने के विवेक में गिरावट के कारण ही व्यक्ति स्वयं के द्वारा निर्मित मुसीबतों से घिरा रहता है और गलत रास्ते पर चलने लगता है और जब तक उसे इस बात का एहसास होता है तब तक देर हो चुकी होती है। इस कहानी संग्रह की पहली ही कहानी 'अतीत' में नताशा एक एस्कॉर्ट गर्ल बन जाती है क्योंकि वो दूसरों की नज़रों में स्वयं को रखकर अपने को देखने वालों में से है।

लेखिका ने ऊपर वर्णित नई समस्याओं के साथ लोक में मौजूद रूढ़वादिता और अंधविश्वासों को भी दर्ज किया है जिससे सबसे ज्यादा पीड़ित महिलाएं ही होती है। अब तो यह चिकित्सकीय और वैज्ञानिक रूप से मान्य हो गया है कि संतान लड़का होगा या लड़की यह पुरुष के गुणसूत्रों से तय होता है लेकिन अभी भी ज्ञान व जागरूकता के अभाव में इस बात के लिए औरतों को ताने सुनना पड़ता हैं कि यह केवल बेटियों की माँ है अभी ताकि पूत नहीं फला। 'छँगुरी' कहानी

में 'छँगुरी' की सास उसकी झाड़ फूंक करवाती है, टोना टोटका दिखाती है कि अगली बार लड़का ही हो। 'छँगुरी' का पति मुन्नर अपने हिसाब से डॉक्टरी जांच भी करवा के यह आश्वस्त रहता है कि अबकी तो लड़का ही होगा। जब 'छँगुरी' अत्यंत गंभीर हालत में होती है तब मुन्नर परेशान भी होता है और अपनी हैसियत के अनुसार जल्द से जल्द उसे अस्पताल लाने का प्रबंध भी करता है। 'छँगुरी' को जब आपरेशन थियेटर में ले जाया जाता है तो वह चिंतित भी होता है लेकिन जब मोटी डॉक्टर उससे कहती है- " बड़ी मुश्किल से तुम्हारी पत्नी और बच्चे को बचा पाए। बड़ी सुंदर बच्ची है, बहुत स्वस्थ।"(3) लेखिका लिखती है कि 'बच्ची' सुनते ही "मुन्नर तो जैसे बहरा हो गया हो। उसे तो बस डॉक्टर के होंठ हिलते दिखाई दे रहे थे।"(4) इसी तरह बेटे कि इच्छा 'मोल' कहानी में पीसीओ वाले की पत्नी हंसा को है जबकि उसके दो बेटियां पहले से है। आज लड़कियाँ लड़कों से किसी भी मामले में कम नहीं है बल्कि कुछ मामलों तो आगे ही है जैसे 2016 के ओलंपिक में भारत को लड़कियों के कारण ही पदक तालिका में स्थान मिला था। लेकिन समाज में जो पुत्र को लेकर अंधामोह अभी भी मौजूद है उसे 'मोल' कहानी में चंद्रा के माध्यम से व्यक्त किया है वो पीसीओ वाले से कहती है-आज बेटियाँ भी बेटों से किसी मामले में कम नहीं है। लेकिन, हमारा समाज कुछ ऐसे अनदेखे बंधनों में आज भी बंधा हुआ है। ये ऐसी धुंध है कि छँटने का नाम ही नहीं लेती है।"(5) लड़की के पैदा होने के बाद उस पर कैसे कैसे अलिखित बंधन समाज में मौजूद है यह 'भाग्य' कहानी में बताया गया है कि जब तरंग शाम के सुनसान जगह पर संगीत की ध्वनि से आकर्षित होकर जाती है और अरविंद उससे कहता है " अच्छा, तो यहाँ कैसे बेटा? यहाँ बड़ा एकांत है और लोगों का आना बड़ा कम रहता है, फिर लड़कियाँ, मेरा खयाल है, बिलकुल नहीं आती होंगी, यहाँ?"(6) यह सुनकर तरंग को ऐसा लगा जैसे उसे झन्नाटेदार तमाचा पड़ा हो।

जब कही आने-जाने को लेकर इतनी समस्या है तो प्रेम को लेकर तो (लड़कियों के) समाज का असहज होना तो तय ही है। उसमें भी यदि दूसरी जाति के लड़के से तो कहना ही क्या। 'जहर' कहानी में मिथिलेश दूसरी जाति की थी जिसके कारण उसकी सास और ननद उससे चिढ़ती है और चिढ़न की हद यह है कि, 20 साल में भी वो कम नहीं होती और दोनों मिलकर उसे अपने देवर को जहर देने के आरोप में गिरफ्तार करा देती है। 'मिलन' कहानी में भी नलिनी जब इरविन से मिलने गोवा जाती है तब इरविन की माँ उससे झूठ बोल देती है कि वो वैण्डी से ही शादी करेगा और अभी वह वैण्डी के साथ घूमने चला गया है।

सुमन जी स्त्री जीवन के कई पहलू और मन की कई परतो को उघाडकर पाठकों के सामने रखती है इस क्रम में बाल मनोविज्ञान भी सुमन सिंह की कलम से अछूता नहीं है। 'फैसला' कहानी में फहीम के माध्यम से लेखिका ने यह दिखाया है कि कैसे इंटरनेट की लत की वजह से बच्चे घर में झूठ बोलते है कि वह कोचिंग जा रहे। पब्जी, ब्लू व्हेल जैसे गेम किशोरावस्था को कैसे आक्रामक

बना रहे यह आए दिन अखबार में पढ़ने को मिलता है। फहीम भी ऐसी ही गलत आदतों की वजह से चिड़चिड़ा होता जा रहा है और वह अपने अभिभावकों से बहस भी करता है जिससे वह उसे बोर्डिंग स्कूल भेजने के बारे में तय कर लेते है। फहीम शुरू में तो बड़ा खुश रहता है लेकिन जैसे-जैसे जाने का समय नजदीक आता है वह घर और ममा- पापा के ज्यादा करीब आ जाता है। वह अपने दोस्त सलीम से कहता है- यार सलीम, जाना तो तय है मेरा। अब तक तो मैं बहुत खुश था। पर, जैसे-जैसे जाने का वक़्त पास आ रहा है, ये घर, दरवाजे ये कमरा, आँगन सब मुझे रोकते से लग रहे है।"(7)

'छँगुरी' कहानी में भी जब सब उसे 'छँगुरी' नाम से बुलाते है तो वह अपनी माँ से शिकायत करती है- "अम्मा इत्ता खराब नाम हमार कांहे रख दिहिस, हमका बहुत सरम आवत है "(8) उसकी माँ हँसते हुए कहती है "का करी बिटिया, भगवानै तुमका जे नाम दिहिन, तुमही बताव... का और कौनों को नाम 'छँगुरी' हुइ सकत है? जेहिका छा अँगुरी होई उहे तो हुई है 'छँगुरी', आंय?"(9) इस व्यंग्य से लेखिका ने उस मनोवृत्ति पर चोट की जिसमें दिव्यांगों के प्रति सहानुभूति तक नहीं होती। लेखिका ने अपनी कहानियों में स्त्री, बूढ़े और वंचित वर्ग की अनेक समस्याओं को पाठकों के सम्मुख रखा। इन कहानियों की एक खास विशेषता यह है कि इसमें पात्र ही अपनी बात ज्यादा कहते है किंतु कहीं-कहीं लेखिका सूत्र शैली में अपनी बात को रखती है जिससे कहानी का मर्म ही खुल जाता है जैसे 'अतीत' कहानी का यह वाक्य कि - अपने मूल्यों को खोकर उसने मूल्यों की कीमत पहचानी हो शायद।"(10)पूरी कहानी को भीतर से खोल देता है। लेखिका ने पात्रों के रहन-सहन,रंग-ढंग के हिसाब से भाषा का प्रयोग किया है। खड़ी बोली, भोजपुरी के अलावा बल्डी(छोटी पहाड़ी) जैसे मालवी शब्द भी है। ज्यादतर कहानियाँ वर्तमान से फ्लैशबैक के माध्यम से अतीत में होते हुए वर्तमान में आती है। जहर जैसी कहानी में 20 साल से ज्यादा का फ्लैशबैक थोड़ा सा पाठकों को असहज कर देती है लेकिन अतीत से होकर पुनः वर्तमान में आना कथ्य को गाढ़ा कर देता है जिससे पूरी छवि अंत तक पाठकों के सामने स्पष्ट हो जाती है।

सन्दर्भ सूची -

1. सुमन सिंह,'छँगुरी' कहानी संग्रह का ब्लर्ब अनंग प्रथम संस्करण, दिल्ली - 2016।
2. वहीं पेज 60
3. वहीं पेज 47
4. वहीं
5. वहीं पेज 62
6. वहीं पेज 51

7. वहीं पेज 22
8. वहीं पेज 42
9. वहीं पेज 43
10. वहीं पेज 17